International Indexed, Refereed Research Journal, ISSN-2250-2629, (Print), E-ISSN-2320-5466, ISSUE-11, VOL-I, Nov,2013

शोध पत्र – हिन्दी

हिन्दी उपन्यासों में प्रेम और यौन भावना
(जैनेंद्र, इलाचंद्र जोशी, नरेश मेहता और मृदुला गर्ग के संदर्भ में)

* डॉ. मनोज कुमार

* प्राध्यापक राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, नाहड़,

मानव की आदिम भावना यौन है और इसका समाज में आदर्श रूप प्रेम है। प्रेम स्त्री–पुरुष के सुखद आकषर्ण को अभिव्यक्त करने वाला शब्द होता है। प्रेम नारी के अस्तित्व को सार्थकता प्रदान करता है। प्रेम और यौन भावना की अभिव्यक्ति साहित्य में पाया जाना स्वाभाविक है। हिन्दी उपन्यास साहित्य भी इससे अछूता नहीं है। हिंदी उपन्यासों में प्रेम और यौन भावना का चित्रण करने वाले हिन्दी उपन्यासकारों की सूची लंबी है। यहां जैनेंद्र, इलाचंद्र जोशी, नरेश मेहता और मृदुला गर्ग के इस श्रेणी के उपन्यासों की विवेचना की गई है।

मुख्य शब्द :–

प्रेम और यौन, मनोग्रंथी, आत्मपीड़न, आत्मोत्सर्ग, स्वच्छंदता।

मानव की आदिम भावना यौन है और समाज में इसका आदर्श रूप प्रेम है। हिन्दी साहित्य के ख्यातिप्राप्त आलोचक डॉ0 नगेन्द्र ने काम को साहित्य की प्रेरणा के रूप में स्वीकार किया है। प्रेम और काम भावना की अभिव्यक्ति हिन्दी सहित्य की सभी विधाओं में दृष्टिगत है। हिन्दी उपन्यास साहित्य भी इससे मुक्त नहीं है। हिंदी उपन्यासों में प्रेम और यौन का चित्रण करने वाले उपन्यासकारों की सूची लंबी है। प्रेम और यौन या काम की अभिव्यक्ति साहित्य में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूपों में हो सकती है। प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति वहां मानी जाती है, जहां लेखक अपने प्रेम और यौन संबंधी विचारों को सीधे अपने या अपने पात्रों के मुख्य से अभिव्यक्त करता है। जैनेंद्र, इलाचंद्र जोशी, नरेश मेहता और मृदुला गर्ग के प्रमुख उपन्यासों की इस दृष्टि से विवेचना की गई है।

जैनेंद्र मनोविश्लेषणवादी उपन्यासकार हैं। उनका मत है ''यौन के प्रति सहानुभूति से विचार होना चाहिए।''[1] उनके पात्रों में मनोग्रंथियाँ (गाँठ) देखने को मिलती हैं। प्रेम और यौन चित्रण की दृष्टि से उनके 'परख', 'सुनीता' और 'त्यागपत्र' उपन्यास अति महत्त्वपूर्ण हैं। 'परख' (1929) और 'त्यागपत्र' (1937) में जैनेंद्र ने प्रेम और यौन का स्वरूप सामाजिक दिखाया है। 'परख' में बालविधवा कट्टो की सत्यधन को न पा सकने की विवशता सामाजिक बंधन है।

कट्टो के लिए सत्यधन ही सत्य है पर वह सत्यधन के समझाने पर बिहारी से विवाह कर लेती है। कट्टो के प्रेम में आत्मपीडन और आत्मोसर्ग की भावना दिखाई देती है। सत्यधन कहता है –''कट्टो को विधवा कहना विधवा शब्द की विड़ंबना है।''[2] 'सुनीता' (1935) में श्रीकांत व हरिप्रसन्न मित्र हैं। सुनीता श्रीकान्त की पत्नी है। श्रीकांत वकील है जबकि हरि ने एक क्रांतिकारी दल की सदस्यता ग्रहण कर ली है। काफी समय बाद दोनों मिलते हैं तो श्रीकांत हरि को अपने घर ले जाता है। वह सुनीता को उसकी देखभाल करने को कहता है। सुनीता श्रीकांत को पति रूप में पाकर काम से अतृप्त थी। वह अपने पति की अनुपस्थिति में हरि की ओर आकृष्ट होती है। वह हरि के विचारों और आदर्शों से प्रभावित होकर उनके संगठन में शामिल होना चाहती है। वह जब हरि के साथ जंगल में संगठन की टोह में जाती है तो एकांत पाकर हरि की दमित वासना पूर्ति के लिए निर्वस्त्र होकर हरि की ओर जाती है। हरि और सुनीता का संबंध यौन भावना पर आधारित है। हरि उसे घर छोड़कर चला जाता है। यहाँ जैनेंद्र ने नारी के दो संतुष्ट रूप दिखाए हैं। हरि के सामने समर्पण के बाद सुनीता स्वयं को श्रीकांत की पत्नी ही मानती है। सुनीता पति और प्रेमी दोनों को संतुष्ट करने में सफल दिखती है। उसका मत है – ''हमारा यह काम है पुरुष को सामने चलावें....यही अधिकार है कि वह पुरुष को पदच्युत न होने दे।''[3]

'त्यागपत्र' के माध्यम से यह दिखाया गया है कि समाज का संरचनात्मक ढाँचा ऐसा है कि पति के बिना समाज में सहारे का नितांत अभाव हो जाता है। मृणाल माता–पिता विहीन लड़की है। उसका प्रेम उसकी सहपाठी के भाई से है। उसके भाई–भाभी उसका विवाह एक अधेड़ से कर देते हैं। वह निर्मल मन से अपने पति को पूर्व प्रेमी के विषय में बता देती है। इस पर वह मृणाल पर अत्याचार करता है और उसका त्याग कर देता है। वह दुराचारी है। मृणाल एक कोयले वाले से विवाह कर लेती है। मृणाल को पता था कि कोयले वाला जीवन साथ नहीं निभाएगा परन्तु उसे अपनी देह समर्पण सामाजिक विवशता नजर आती है। यहाँ यौन मनोविज्ञान की विषय–वस्तु न होकर सामाजिक क्षेत्र की वस्तु बन गया है। मृणाल के माध्यम से प्रेम की नई नैतिकता बनाने का प्रयास किया गया है। वह कहती है – ''मैं समाज को तोड़ना–फोड़ना नहीं चाहती। समाज टूटा कि फिर हम किसके भीतर बनेंगे।''[4]

इलाचंद्र जोशी ने अपने उपन्यास 'पर्दे की रानी' और 'प्रेत और छाया' में प्रेम और यौन का बहुरंग चित्रण किया है। 'पर्दे की रानी' में दिखाया गया है कि पुरुष केवल अपनी वासना पूर्ति के लिए विवाह करते हैं। विवाह को वे दुराचरण हेतु आवरण मानते हैं। शीला शिक्षित और समर्पित नारी है परंतु नंदकिशोर

उसे प्रेम नहीं करता। वह मानता है कि वह उसकी कामना पूर्ति करने में सक्षम नहीं है। उसके अनुसार – ''उसने अपने हृदय का रस निचोड़–निचोड़कर मुझे दिया है, पर वह रस मेरी आत्मा तक पहुँचने से पहले ही शरीर की जलती हुई आग से सूखता चला गया है।''[5] नंदकिशोर शीला को विष दे देता है और इससे परिचित होते हुए भी पति प्रेम में समर्पित शीला उसे खा जाती है। पत्नी से वासनात्मक रूप से असंतुष्ट पति की कुटिलता और समर्पित स्त्री–प्रेम का यह अनन्य उदाहरण है। 'प्रेत और छाया' उपन्यास का पात्र पारसनाथ स्त्री को घृणा का पात्र समझता है। उसका विवाह संबंध में विश्वास नहीं है। उसका कई स्त्रियों से यौन संबंध रहा पर किसी से स्थायी संबंध नहीं बना सका। मंजरी उसकी झूठी सहानुभूति में फंसकर अपना सबकुछ उसे समर्पित कर देती है पर उसे भी वह मंझधार में छोड़कर चला जाता है।

वह कहती है – ''तुम उसी सनातन पुरुष के प्रतिनिधि ा हो जिसने युगों से नारी को छल–ठगकर बल से दबाकर उसे हाड–माँस की बनी निर्जीव पुतली का रूप देने में कोई बात उठा नहीं रखी है।''[6] समाज में प्रतिष्ठा पाने की लालसा में वेश्या नंदिनी भुजौरिया से विवाह कर लेती है परंतु धनपिपासु और नपुंसक भुजौरिया धनोपार्जन हेतु उसे वापस वेश्यावृति को प्रेरित करता है। इस उपन्यास में आर्थिक विषमता के कारण पुरुषों की बेवफाई व स्त्रियों का समर्पित प्रेम दिखाया गया है।

नरेश मेहता के 'डूबते मस्तूल' में रंजना नामक अद्वितीय सुंदर नारी का अतिशयोक्तिपूर्ण भोग चित्रण है जिसमें उसके अलौकिक सौदंर्य के कारण दस से अधिक पुरुष ने भोगा था। कई बार विपरीत परिस्थितियों और कई बार उसने स्वेच्छा से नए–नए पुरुषों से संबंध स्थापति किए। उसने परिस्थितियों से समझौता किए रखा–''सब रंजना के पास इस तरह आए जैसे रंजना का शरीर उनके पुरुष शरीर का ऋण था–कुछ ब्याज लेकर चले गए, कुछ लोगों ने मूलधन के आधार पर कुछ दिन व्यापार किया।''[7]

मृदुला गर्ग के उपन्यास 'उसके हिस्से की धूप' की नायिका मनीषा उद्योगपति जीतेन से विवाह कर लेती है परंतु उनका दाम्पत्य संबंध अधिक दिन चल नहीं पाता। वह अपने अर्थशास्त्र के प्रोफेसर मधुकर से प्रेम करने लग जाती है और जीतेन से तलाक ले लेती है। वह जीतेन से कहती है – ''जहाँ तक बदनामी का सवाल है वह मेरी होगी तुम्हारी नहीं। तुम्हे जो दुख या परेशानी होगी उसके लिए मुझे अफसोस है।''[8] कालांतर में वह जीतेन से मिलती है और जीतेन का साथ पाने की फिर इच्छा करती है। यह उपन्यास त्रिकोणीय प्रेम कहानी पर लिखा गया है। जिसमें मनीषा अपने जीवन की रिक्तता को मनचाहे पुरुष से भरने की लालसा में भटकती दिखाई है।

मृदुला गर्ग के 'चित्तकोबरा' की विषय–वस्तु मनु और रिचर्ड हचिसन नामक चर्च के पादरी के प्रेम पर आधारित है। मनु का महेश से और रिचर्ड का जैनी से विवाह हो चुका है। उपन्यास में रिचर्ड और मनु के विवाहेत्तर प्रेम संबंध को सहज भाव से दिखाया गया है। मनु आदर्श पत्नी की सभी नैतिकताओं को धत्ता बताकर स्वतंत्र जीवन जीने की लालसा रखती है। उपन्यास के दो–तीन पृष्ठों में यौन क्रिया का क्रमिक चित्रण किया गया है, जिन्हें अश्लील करार देते हुए दिल्ली प्रशासन ने लेखिका को गिरफ्तार कर लिया था। मनु रिचर्ड से यह जानते हुए भी प्रेम करती है कि उनका प्रेम बेमेल है। यह उसके प्रेम की पराकाष्ठा है। रिचर्ड के जाने पर मनु उसकी स्मृतियों के सहारे जीवन व्यतीत करने का फैसला करती है।

सार रूप में कहा जाए तो विवेच्य उपन्यासों में चित्रित प्रेम और यौन चित्रण अपना बहुरंगी और बहुआयामी रूप लिए हुए हैं। इनमें कुछ नायिकाएँ ऐसी भी हैं जो अपना जीवन दोहरे रूप में जी रही हैं। इन उपन्यासों में स्त्री–पुरुष प्रेम और यौन संबंध हमें तटस्थ भाव से नई दिशा में सोचने को विवश करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. जैनेंद्र;समय और हम;पृ0 33
2. जैनेंद्र;परख;पृ0 33
3. जैनेंद्र;सुनीता;पृ0 82–83
4. जैनेंद्र;त्यागपत्र;पृ0 72
5. इलाचंद्र जोशी;पर्दे की रानी;पृ0 182–183
6. इलाचंद्र जोशी;प्रेत और छाया;पृ0 420
7. डूबते मस्तूल;नरेश मेहता;पृ0 135
8. मृदुला गर्ग;उसके हिस्से की धूप;पृ0 126